ममता

मैं बहुत खुश थी। सपनों की नगरी मुंबई ने बाहे फैलाकर मेरा स्वागत किया था। यहां मैं कॉलेज में पढ़ने आई थी, मां-बाप और दोस्तों से दूर थी उन हजारों की तरह अपना सपना पूरा करने मुंबई के एक प्रसिद्ध कॉलेज में पढ़ने गई जिससे बड़े पर्दे पर नहीं उसके पीछे रहकर लोगों का मनोरंजन कर सकूं।

दिन बीतते गए और 3 साल की कड़ी कोशिशों के बाद मुझे डिग्री मिल गई। अब वक्त था एक फिल्म का कथानक लिखने का। कॉलेज में मैंने कहीं छोटी फिल्में बनाई थी और अब ऊंची छलांग लेने का समय था। कंप्यूटर पर लिखना शुरू किया पर चार लाइने लिख दी फिर लगता जैसे इससे भी अच्छा हो सकता है और एक बटन से पिछले 15 मिनट की मेहनत को हटा देती।

एक अच्छी कहानी लिखने के लिए कोई अच्छा मुद्दा होना चाहिए। बस उसी की तलाश में मैं कई लोगों से मिलती, कई लोगों से बातें करती पर मेरा मन संतुष्ट नहीं था। मैं कोई धमाका करना चाहती थी जिससे पहली फिल्म में ही लोग मुझे जान जाए। एक दिन यूं ही अपने दोस्त के घर जा रही थी टैक्सी जाम में फंसी थी और मैं किसी आई हुई थी अपना मिजाज बदलने के लिए गाने चलाने वाली थी कि खिड़की के बाहर नजर गई तो देखा कि एक किन्नर एक छोटी बच्ची को डांट ही मारती हुई उठाकर एक गाड़ी की तरफ ले जा रही है मानो उसका अपहरण कर रही हो। बच्ची चिल्ला रही थी कि बस कोई आकर उससे बचा ले। मुझसे रुका नहीं गया। मैं टैक्सी से उतरी और उनकी ओर भागी। भागते भागते मैंने उस किन्नर के हाथ से बच्ची को जैसे छीन लिया भार के वजह से वह मेरे हाथों में गिर गई। हमारी सांसें फूल गई थी पर मेरा सारा ध्यान उस किन्नर पर था। मैंने उस बच्ची को उठाया और अपने पीछे छुपा लिया। उस किन्नर कि साड़ी पर उसके नाम का बैच लगा हुआ था- गौरी। उसने मेरी ओर गुस्से से देखा और मैंने उससे पूछा, " क्या तुम्हें शर्म नहीं आती एक बच्ची को उसके मां-बाप से अलग करते हुए ?" उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने बच्ची की ओर देखकर सोचा कि उसके उदास चेहरे पर मुझे देखकर खुशी चमकेगी। परंतु उसके विपरीत उसके चेहरे पर एक ऐसा अजीब सा भाग था जैसे वह मुझे देखकर व्याकुल सी हो गई थी। वह मेरा हाथ छुड़ाने को तड़प रही थी। मैं उसका हाथ छोड़ दिया और सहसा उस किन्नर से लिपट गई। उस बच्ची को हुआ क्या था? क्या वह बचता नहीं चाहती? बच्ची ने किन्नर को मां कहकर पुकारा और उसके साथ चली गई। मुझे विश्वास नहीं हुआ। पीछे देखा तो टैक्सी वाला भाड़ा लेने को खड़ा था। मैंने उनकी गाड़ी का पीछा किया और देखा कि वे लोग समुद्र की ओर जा रहे थे। उनकी गाड़ी और मेरी टैक्सी रुक गई। मैंने उतरकर गौरी जी से माफी मांगी और उन्होंने मुझसे कहा, "कोई जरूरत नहीं है।" मैं उनकी कहानी जानना चाहती थी। अपनी बेटी को पाव दिला कर उन्होंने उसे रेत के किले बनाने भेज दिया और चाय लेकर एक बेंच पर बैठ गई। । दिन में ऐसी जगह आई थी, मुझे यह कपड़े में लिपटी यहां मिली। शायद लड़की है, मां बाप खुश नहीं होंगे तो इधर छोड़ गए। मैंने उसे देखा तो उसमें मुझे खुद का चेहरा दिखा। मुझे भी कभी मेरे अस्तित्व के कारण मेरे मां बाप अपने इधर छोड़ दिया था। तब से मैं ही इसकी मां हूं। जिस दिन वह मुझे मिली थी उस दिन हम उसका जन्मदिन मनाते हैं और आज उसका जन्मदिन है।

मैं कुछ बोल ना सकी। हमारी आंखों में आंसू थे। उसने आज मुझे मेरी कहानी के मुद्दे से कई ज्यादा दे दिया था। शायद आज तक मैं वहाँ होने का मतलब ही नहीं जानती थी। उसने किसी और की सरकार को अपनी दुनिया बना ली थी - अब वह गौरी की बेटी निमिषा थी।

देवांशी केडिया

12 D